इतिहास और आलोचक दृष्टि

साहित्य जीवन की पुनर्रचना है तो आलोचना साहित्य की पुनर्रचना है। साहित्य के इतिहास को तब जीवन, साहित्य और आलोचना की गति तथा उन के आपसी रिश्तों को समझना तथा व्याख्यायित करना है। रचना से पुनर्रचना के इन स्वचेतन होते क्रमिक चरणों में वैचारिकता का संपर्क बढ़ता जाए तो यह स्वाभाविक है। इस स्थिति में कह सकते हैं कि साहित्य का इतिहास अनुभव और विचार की अंतर-क्रिया की पुनर्रचना है। और उस के लिए सब से बड़ी समस्या और चुनौती यह है कि अपने को साहित्य का इतिहास कह कर वह पहले स्वयं तो इतिहास की प्रक्रिया में अंगीकृत हो।

'इतिहास और आलोचक-दृष्टि' में हिंदी साहित्य के इतिहास का एक नये स्तर पर अनुभावन और विवेचन संभव हुआ है। पूरे अध्ययन में दो प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती हैं। एक ओर तो ख्यात आलोचकों के वैशिष्ट्य का रूप उभरता है, और दूसरी ओर उन के द्वारा विवेचित अलग-अलग इतिहास-युगों का चित्र स्पष्टतर होता चलता है। इतिहास और आलोचना का हिंदी साहित्य के संदर्भ में ऐसा संपृक्त और द्वन्द्वात्मक रूप पहली बार देखने को मिलता है। कविता-यात्रा और गद्य की सत्ता के विविध रूपों के विवेचन और भाषिक सर्जनात्मक अन्वेषण के बाद समीक्षक ने अगले चरण में इतिहास-आलोचना की विशिष्ट प्रक्रिया का यह अध्ययन प्रस्तुत किया है, जिस विकास-क्रम में उस की प्रामाणिकता प्रशस्त होती है।

हिंदी साहित्य के इतिहास का कोई भी अध्ययन इस कृति के द्वारा समृद्ध और समग्रतर होगा।